ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/322070597

□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ Writing a Research Report

Chapter · December 2016

CITATIONS
0

READS
50,625

1 author:

Patanjali Mishra
Vardhaman Mahaveer Open University
44 PUBLICATIONS **14** CITATIONS

SEE PROFILE

Some of the authors of this publication are also working on these related projects:

Project Research Methods in Psychology, Sociology and Education in Hindi language View project

Project Review of curriculum frameworks available across the globe View project

All content following this page was uploaded by Patanjali Mishra on 26 December 2017.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

इकाई - 20

शोध प्रतिवेदन लेखन

(Writing a Research Report)

इकाई की रूपरेखा

20.1 प्रस्तावना

20.2 उद्देश्य

20.3 शोध प्रतिवेदन का प्रारूप

20.4 प्रारंभिक खंड

20.5 प्रतिवेदन का मुख्य भाग

20.6 लेखन शैली

20.7 शोध रिपोर्ट लिखने की शैली के कुछ सामान्य नियम

20.8 सारांश

20.9 शब्दावली

20.10 निबंधात्मक प्रश्न

20.11 अतिरिक्त संदर्भ ग्रंथ सूची

20.1 प्रस्तावना (Introduction)

इससे पूर्व की इकाई में आपने शोध प्रतिवेदन के प्रारूप के बारे में जानकारी प्राप्त की | साथ में अपने यह भी जानकारी प्राप्त की कि इसकी रचना के लिए हम किन चरणों से होकर गुजरते हैं | प्रस्तुत इकाई में हम शोध प्रतिवेदन कैसे लिखा जाता है, के बारे में पढेंगे | किसी भी समस्या पर शोध (Research) करके उसका निष्कर्ष निकाल लेना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है ,बल्कि उसे एक वैज्ञानिक तरीके से प्रतिवेदित करना भी उसका मुख्य उद्देश्य होता है | प्रतिवेदन तैयार करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि उसके प्रस्तुति करण का स्वरूप इतना विस्तृत न हो कि उसमें अनावश्यक सूचनाएं भर जाऐ और यह भी ध्यान रखना चाहिये कि इतना संक्षिप्त भी न हो कि उसमें आवश्यक सूचनाएं आने से रह जाये | इसलिए यह आवश्यक है कि प्रतिवेदन इस प्रकार का हो कि उसमें संघटित रूप से शोध से सम्बंधित सभी आवश्यक सुचनाये अवश्य आ जाये | किसी शोध के प्रतिवेदन में अन्य बातो के अलावा स्पष्टता ,यथार्थता तथा संक्षिप्तता तीन प्रमुख होते हैं | किसी भी मनोवैज्ञानिक शोध वैज्ञानिक ढंग प्रतिवेदित करने के लिए अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ ने जो प्रारूप तैयार किया है वह ठीक है | भारतीय मनोवैज्ञानिक भी इसी प्रारूप का उपयोग शोध प्रतिवेदन लिखने में कर रहे है |

20.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- शोध प्रतिवेदन कैसे लिखा जाता है ,इसके बारे में जान सकेंगें |
- शोध प्रतिवेदन लिखने के बारीकियों को समझ सकेंगे |
- शोध प्रतिवेदन लिखने में भाषा के महत्व को समझ पायेंगे |
- शोध प्रतिवेदन लिखने में कौन –कौन सी सावाधानियाँ रखनी चाहिए इसको जान पायेंगे |

20.3 शोध प्रतिवेदन का प्रारूप (Format of Research Proposal)

मनोवैज्ञानिक संघ ने शोध प्रतिवेदन लिखने हेतु एक प्रारूप दिया है जिसका अनुपालन भारतीय मनोवैज्ञानिक भी अपने शोध को उसी ढंग से प्रकाशित कर रहे है |इस प्रारूप को ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिक शोध को हम निम्नलिखित भागों में बांटकर प्रस्तुत कर सकते हैं –

प्रारंभिक खंड(Preliminary Section)

1. आवरण पृष्ठ (Cover Page)
2. प्रस्तावना
3. सारणियों की सूची
4. आरेखों की सूची

प्रतिवेदन का मुख्य भाग (Main Body of the Text)

प्रस्तावना

1. समस्या का कथन
2. सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण
3. समस्या की सार्थकता
4. अध्ययन का परिसीमन
5. परिकल्पनाओं का कथन
6. महत्वपूर्ण पदों की परिभाषा

अध्ययन की अभिकल्पना

1. प्रयुक्त प्रक्रियाएं
2. आँकड़ों के स्रोत
3. आंकड़ें संग्रहण के यन्त्र
4. प्रतिचयन एवं आंकड़ें संग्रहण की विधियाँ

आँकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या

सारांश व निष्कर्ष

1. समस्या व प्रक्रियाएं
2. प्रमुख परिणाम व निष्कर्ष

3. शोध के लिए सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ग्रन्थ सूची
2. परिशिष्ट

अभ्यास प्रश्न

1 शोध प्रतिवेदन का प्रारूप लिखें |

2 शोध प्रतिवेदन लिखने के महत्वपूर्ण चरणों के बारे में बताएं |

20.4 प्रारंभिक खंड (Preliminary section)

1. **आवरण पृष्ठ (Title Page)**: इसमें सामान्यत: निम्न सूचना रहती है –
   1. **अध्ययन का शीर्षक** : मनोवैज्ञानिक शोध का शीर्षक एक पृष्ठ पर अलग से लिखा जाना चाहिए | शीर्षक के नीचे शोधकर्ता का नाम था उसके संस्थान जिससे वे सम्बंधित हैं का उल्लेख होना चाहिए |
   2. **प्रस्तावना या आमुख** : प्रस्तावना को एक अलग पृष्ठ पर लिखना चाहिए इसका कोई अलग से शीर्षक नहीं होता है | इसमें मुख्य रूप से शोधकर्ता शोध समस्या की पृष्ठ भूमि तैयार करने की दृष्टि से शोध कर्ता सम्बंधित अध्ययनों का समीक्षात्मक रूप में वर्णन करता है | शोध के उद्देश्य को परिकल्पना के रूप में उल्लेख किया जाता है | शोध में एक या एक से अधिक परिकल्पना हो सकती है |
   3. **सारणियों की सूची** : सारणियों की सूची प्रदान की जाती है |
   4. **आरेखों की सूची :** : आरेखों की सूची प्रदान की जाती है |

अभ्यास प्रश्न

1 प्रस्तावना से आपका क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट करें |

2 आवरण पृष्ठ पर कौन –कौन से सूचनाएं रहनी चाहिए ?

20.5 प्रतिवेदन का मुख्य भाग (Main Body of the Report):

प्रस्तावना या आमुख (Introduction) : प्रस्तावना को एक अलग पृष्ठ पर लिखना चाहिए इसका कोई अलग से शीर्षक नहीं होता है | इसमें मुख्य रूप से शोधकर्ता शोध समस्या की पृष्ठ भूमि तैयार करने के लिए शोध कर्ता सम्बंधित अध्ययनों का समीक्षात्मक रूप में वर्णन करता है | शोध के उद्देश्य को परिकल्पना के रूप में उल्लेख किया जाता है | शोध में एक या एक से अधिक परिकल्पना हो सकती है |

अध्ययन की अभिकल्पना (Design of the Study) : इस खंड में अध्ययन की अभिकल्पना को विस्तार से समझाया जाता है | इसमे अध्ययन के लिए आवश्यक प्रकार के आँकड़ों की प्रकृति ,

उनके संग्रहण में प्रयुक्त औजार व युक्तियां और उनके एकत्र करने की विधि के विषय में लिए गए निर्णयों का व्यापक वर्णन होता है | अनुसंधान समष्टि की परिभाषा , प्रतिदर्श के साइज की युक्ति संगति , प्रतिचयन की विधि , उन व्यक्तियों की संख्या जो भागीदारी के लिए तैयार ना होने के करण , अलग कर दिए गए या जिन्होंने अध्ययन के विभिन्न चरणों में भाग नहीं लिया और क्यों, कहाँ ,कब और किस प्रकार के आकडें संग्रहित किये गए ;आँकड़ों के एकत्र करने में प्रयुक्त औजार व युक्तियां और उनकी विश्वसनीयता व वैधता ;प्रयोग की विधि व साथ में कल्पनाओं का विवरण, वर्गीकरण ,चरों का वर्गीकरण व हेरफेर ,उपचरों की प्रकृति , परीक्षार्थियों को दिए गए निर्देश , साक्षात्कार कर्ताओं व प्रेक्षकों की विशेषताए और उन्हें दिए गए प्रशिक्षण के प्रकार , आँकड़ों के किन –किन प्रकार के विश्लेषण किये गए , अपनाई गयी सांख्यकीय विधियाँ और उनको चुनने के कारण , और आँकड़ों को किस प्रकार व्यवस्थित कर विश्लेषण व व्याख्या के लिए प्रस्तुत किया जायेगा , आदि का उल्लेख करता है |

आँकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या (Analysis and interpretation of the data):- इस भाग में शोध कर्ता समस्या ,परिणाम तथा प्राप्त निष्कर्षों का उल्लेख करता है | इसमें शोध कर्ता शोध से प्राप्त आंकडों की व्याख्या करता है | वर्तमान शोध के परिणाम पहले के परिणामों से मेल खाते हैं कि नहीं या उनसे भिन्न है | शोध परिकल्पनाओं की पुष्टि हो रही है कि नहीं | यदि शोध में परिकल्पनाओं की पुष्टि नहीं हो रही है तो उन कारणों पर भी प्रकाश डाला जाता है कि जिससे ऐसा हुआ हो | विवेचन वाले इस भाग में प्राप्त परिणामों का सामान्यीकरण किन –किन के ऊपर किया जा सकता है ,इसमें जो परिसीमाएं होती हैंउनका भी वर्णन किया जाता है | उन चरों का भी उल्लेख किया जाता है जिनका नियंत्रण नहीं किया जा सकता है | यदि शोध प्रारूप या कार्य विधि में कोई परिवर्तन किया गया है तो उसका भी उल्लेख इस भाग में किया जाता है | इस भाग में शोध किस विषय से सम्बंधित है तथा उसके प्राप्त परिणाम या निष्कर्ष क्या है का भी वर्णन किया जाता है | यह खंड अनुसंधान प्रतिवेदन का ह्रदय है | आँकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या या तो पृथक अध्यायों में प्रस्तुत किये जा सकते हैं या समाकलित करके एक ही अध्याय में | आँकड़ों विषयक चर्चा के साथ सारणियो व आरेखों में प्रस्तुत किये जाते है | सारणियों व आरेखों का निर्माण व सूची इस प्रकार होनी चाहिए कि वह सार्थक संबंध स्पष्ट करे और स्वतः स्पष्ट हो |जटिल व लंबी सारणियों को परिशिष्ट में देना चाहिए अन्यथा विषय का चर्चा का क्रम टूट जाता है | आँकड़ों के विषयक चर्चा में , सारणियो व आरेखों में दी हुई विस्तृत सूचना को प्रतिवेदन में दोहराना नहीं चाहिए | उसमें केवल महत्वपूर्ण तथ्यों व संबंधो कोइंगित करना चाहिए जिससे आँकड़ों को अर्थ मिल सके और उनके सम्बन्ध में कुछ व्यापकीकरण बन सके |

सूत्र व सांख्यकीय प्रक्रियायें जिनका आँकड़ों के विश्लेषण में प्रयोग किया गया हो , स्पष्ट निर्दिष्ट और व्याख्यायित होनी चाहिए | सांख्यकीय सूचना योग , अनुपात , समानुपात या प्रतिशत , आवृत्ति वितरण , मध्य प्रसरण या मानक विचलन , सहसंबंधगुणांक व प्रयुक्ति के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है | किसी विशेष सार्थकता परीक्षण के चयन के कारण , उनके प्रयोग की परिकल्पनायें और परिणामों पर पहुँचने के लिए चुने हुए विश्वास्यता स्तर सावधानी से प्रस्तुत किये जाने चाहिए| अप्रत्याशित संबंधो या अप्रत्याशित प्रवृतियों के रूप में अकस्मात उत्त्पत्तियों को पूर्ण रूप में प्रतिवेदित करना चाहिए | अनुसंधान अभिकल्पना ; औजार , तकनीकों या समष्टि की कमियों , जो

अध्ययन की अवधि में प्रगट हुई हो , स्पष्ट चर्चा होनी चाहिए , और साथ ही वह रीति जिसमें घटकों ने अध्ययन के परिणामों पर प्रभाव डाला हो |

सारांश एवं परिणाम (Summary and Conclusion) – इस भाग में शोध कर्ता यह लिखता है प्रयोग या शोध में किस प्रकार के प्रदत्त (तथ्य) प्राप्त हुए | आंकड़ों के विश्लेषण में किस प्रकार की सांख्यकीय विधियों का उपयोग किया जाता है | लिखते समय यह ध्यान देना आवश्यक होता है कि प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किसी भी आधार पर किसी भी प्रकार के अनुमान तथा निष्कर्ष का उल्लेख नहीं होना चाहिए | निष्कर्षों को संक्षिप्त रूप में परीक्षित परिकल्पनाओं से सीधा सम्बंधित करते हुए प्रस्तुत किया जाता है | वह यह घोषणा करते हैं कि अध्ययन के परिणाम परिकल्पनाओं को स्वीकार करते है या अस्वीकार | यह निष्कर्ष वर्तमान सिद्धांत में उठाये गए प्रश्नों के उत्तर प्रदान करते हैं और उसमें संशोधन के सुझाव देते हैं | इसके अतिरिक्त अनुसंधायक उन अनुत्तिरक प्रश्नों की सूची बना सकता है जो अध्ययन की अवधि में उठे और जिनके लिए वर्तमान समस्या की जाँच के विस्तार से बाहर आगे अनुसंधान की आवश्यकता है | यदि परीक्षण के अधीन क्षेत्र में आगे अनुसंधान लाभदायक प्रतीत नहीं होता है और समस्या के लिए नए उपगमन की आवश्यकता है तो अनुसंधान को सुझाव देने चाहिए | सारांश यह है कि निष्कर्षों की चर्चा व प्रस्तुति से पाठक को पूर्णता व निश्चित लाभ का आभास होना चाहिए |

सन्दर्भ खंड (Reference Section)– इस खंड में ग्रन्थ सूची व परिशिष्ट होते हैं | इस भाग में उन अध्ययनो या लेखकों को आकारादि क्रम से लिखा जाता है जिन्हें अध्ययनो में शामिल किया गया था | सन्दर्भ को विशेषकर इस प्रकार लिखते हैं –

Anderson , R.L.and Baneroft ,T.A.(1952). Statistical Theory in Research .New York :Mc Graw Hill .

Cohen, L.(1955) . Statistical Methods for Social Scientists . An Introducation , N.J. Prentice Hall Inc.

D'Amato M.R.(1970) Experimental Psychology , New York :Mc Graw Hill.

ग्रन्थ सूची के बाद परिशिष्ट दिया जाता है | इसमें शोध कर्ता शोध में प्रयुक्त परीक्षणों,विस्तृत सांख्यकीय गणना आदि को रखता है |

अभ्यास प्रश्न

1 अध्ययन की अभिकल्पना पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें |

2 आँकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या (Analysis and interpretation of the data) का शोध प्रतिवेदन में क्या स्थान होता है ? स्पष्ट करें |

3 सारांश एवं परिणाम (Summary and Conclusion) का शोध प्रतिवेदन में क्या स्थान होता है? स्पष्ट करें |

20.6 लेखन शैली (Style of Writing)

भाषा :- (Language):- यदि किसी उत्त्कृष्ट वैज्ञानिक जाँच के प्रकरण और परिणाम दूसरों को प्रभावी ढंग से संचरित नहीं होते तो वह निरर्थक है | कामवेल (1969) दुदैल (1976)तथा

तुराबियन (1976) अनेक शैली मैनुअल प्रदान किये हैं | उनमें से किसी एक को अपना कर अनुसंधायक सम्पूर्ण प्रतिवेदन में उसी का अनुसरण कर सकता है | वैज्ञानिक प्रतिवेदन में परिकल्पनाओं का स्पष्ट प्रकथन , प्रक्रिया का भावुक वर्णन न होकर संगत व वस्तुनिष्ठ प्रस्तुति की आवश्कता होती है | अनुसंधान प्रतिवेदन प्रायः ज्ञानी व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है जो सदा तर्क प्रक्रिया में दोष खोजते हैं |यह भी संभव है कि पाठक प्रयोग या अभिकलन दोहरा कर परिणामों को जाँचना चाहे | इस स्थिति से निपटने के लिए अनुसंधान प्रतिवेदन इतनी सावधानी से प्रस्तुत किया जाना चाहिए कि वह अन्य पाठकों की क्रांतिक विद्वता के परीक्षण में खरा उतरे |अनुसंधान प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण रचनात्मक , तर्क संगत व संक्षिप्त होना चाहिए ,जिसमें यथासंभव सरल सामान्य शब्दों व वाक्यों का प्रयोग होना चाहिए | उसकी भाषा नियमनिष्ठ व स्पष्टवादी होनी चाहिए | अशिष्ट कहावत या अविनीत शब्दावली न हो | व्यक्तिवाचक सर्वनामों जैसे मैं , आप , मेरा , हमारा , और हमे का प्रयोग नहीं होना चाहिए | उदाहरण के लिए यह कहने के स्थान पर 'मैंने सामान्य विज्ञान का उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थियों के दोनों वर्गों पर संचालित किया' निष्क्रिय वाक्य, "विद्यार्थियों के दोनों वर्गों पर सामान्य विज्ञान का उपलब्धि परीक्षण संचालित किया गया" का प्रयोग वर्णनात्मक होगा | 'अनुसंधानकर्ता ' या 'जाँचकर्ता ' जैसे शब्दों के प्रयोग कर , व्यक्ति वाचक सर्वनाम के प्रयोग से बचाना चाहिए |

अभ्यास प्रश्न

1 शोध प्रतिवेदन की लेखन शैली कैसी होनी चाहिए ?

2 शोध प्रतिवेदन की भाषा कैसी होनी चाहिए ?

20.7 शोध रिपोर्ट लिखने की शैली के कुछ सामान्य नियम (Some fundamental rule of style of writing a research report)

किसी भी वैज्ञानिक शोध के रिपोर्ट लिखने का उद्देश्य मूलतः यह होता है कि पाठक किये गए अध्ययन को ठीक से समझे , उसका मूल्यांकन करें तथा उस अध्ययन का यदि चाहे तो वह उसका वार्णिक प्रतिकृति (Literal Replication) कर सके | इसके लिए यह आवश्यक है कि वह शोध रिपोर्ट लिखने के कुछ आधार भूत नियमों का पालन करे | इन नियमों में निम्नांकित प्रमुख हैं –

1. शोध रिपोर्ट में वैसा शोध का वर्णन किया जाता है जो पूरा हो चुका होता है | अतः इसे भूतकाल में लिखा जाता है | इसके अपवाद के रूप में मात्र वैसा निष्कर्ष जो वर्तमान या भविष्य की परिस्थिति के लिए लागू होता है , को ही वर्तमान काल में लिखा जाता है |
2. उन सभी स्रोतों का उल्लेख करें जिनसे आपने समस्याओं या तथ्यों को लिया है | इसमें लेखक का अंतिम नाम तथा वर्ष का उल्लेख होना चाहिए | जब दो या दो से अधिक लेखकों द्वारा प्रकाशित किसी शोध पात्र से तथ्यों या सूचनाओं को लिया जाता है तो उसमें प्रथम बार तो सभी नामों का उल्लेख किया जाता है औएर उसके बाद सिर्फ प्रथम लेखक तथा लैटिन सूक्ति का उपयोग किया जाता है |
3. जहाँ तक संभव हो रिपोर्ट में किसी अन्य स्रोत से प्रत्यक्ष कुछ उद्धृत नहीं करना चाहिए बल्कि उसमें उद्धृत विचारों को अपनी भाषा शैली में लिखनी चाहिए | शोध रिपोर्ट में

लेखक को किसी दूसरे अध्ययन न कि उसके लेखक को संबोधित करते हुए तथ्यों को लिखना चाहिए |

4. अपने अध्ययन को अन्य अध्ययनों से भिन्न करने के लिए " This Study" या "The Present Study" का उपयोग किया जाना चाहिए | परन्तु "This Study" या "The Present Study" का प्रयोग मानव क्रिया के रूप में नहीं होना चाहिए यथा "This Study Attempted to show……." नहीं लिखा जाना चाहिए |
5. संकेताक्षरों के प्रयोग को कम से कम करना चाहिए | शोध रिपोर्ट में संकेताक्षरों का प्रयोग मात्र तीन परिस्थितियों में युक्तिसंगत माना गया है |

अ. अगर पद ऐसा है जिसमें कई शब्द समिलित हुए हो या उसमें बहुत सारे अक्षर सम्मिलित हुए हों या उसमें बहुत सारे अक्षर सम्मिलित हों |

ब . अगर पद का उपयोग रिपोर्ट में बहुत बार हुआ हो |

स. अगर शोध में बहुत सारे संकेताक्षरों का प्रयोग आवश्यक हो , तो प्रत्येक सहशब्द के प्रथम अक्षर को मिलाकर इसे तैयार किया जा सकता है | पूरे पद को प्रथम बार परिभाषित करके फिर उसके बाद उसका संकेताक्षर का उपयोग किया जा सकता है |

6. जहाँ तक संभव हो स्वीकृत मनोवैज्ञानिक पदों का ही उपयोग किया जाना चाहिए | इसके अतिरिक्त संक्षिप्त संकेत तथा अपभाषी पदों का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि इसका अर्थ दूसरे देशों के लोगों द्वारा संभवतः नहीं समझा जा सकता |

7. शोध रिपोर्ट में शून्य से नौ तक की संख्याओं के लिए शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए तथा उससे अधिक की संख्याओं के लिए अंकों का प्रयोग किया जाना चाहिए | परन्तु अंक का प्रयोग किसी भी आकार संख्या के लिए हो सकता है यदि–

अ. शोधकर्ताओं को संख्या का एक क्रम लिखना हो और उसमें कम से कम 10 या उससे अधिक हो |

ब . संख्या में दशमलव हो या सांख्यकीय परिणाम का वर्णन हो या कोई यथार्थ मापन के सन्दर्भ में लिखा जाना हो | जैसे यह लिखा जा सकता है कि – "The five conditions with 3 individuals per condition ...."

शोध रिपोर्ट में लिखी किसी बात की शुरुआत अंक में लिखे संख्या के साथ नहीं होती है |

8. शोध रिपोर्ट में स्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए | पूर्वाग्रहित भाषा का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए | जहाँ संभव हो तटस्थ पदों जिसका ही प्रयोग करना चाहिए |

अभ्यास प्रश्न

1 शोध प्रतिवेदन लिखने के सामान्य नियमों की व्याख्या करें |

2 शोध प्रतिवेदन लिखने में संकेताक्षरों का प्रयोग कैसे करेंगे ?

20.8 सारांश (Summary)

किसी भी समस्या पर शोध (Research) करके उसका निष्कर्ष निकाल लेना ही महत्वपूर्ण नहीं होता है ,बल्कि उसे एक वैज्ञानिक तरीके से प्रतिवेदित करना भी उसका मुख्य उद्देश्य होता है | प्रतिवेदन तैयार करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि उसके प्रस्तुति करण का स्वरूप इतना विस्तृत न हो कि उसमें अनावश्यक सूचनाएं भर जाऐ और यह भी ध्यान रखना चाहिये कि इतना संक्षिप्त भी न हो कि उसमें आवश्यक सूचनाएं आने से रह जाये | मनोवैज्ञानिक संघ ने शोध प्रतिवेदन लिखने हेतु एक प्रारूप दिया है जिसका अनुपालन भारतीय मनोवैज्ञानिक भी अपने शोध को उसी ढंग से प्रकाशित कर रहे है | इस प्रारूप को ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिक शोध को हम निम्नलिखित भागो में बांटकर प्रस्तुत कर सकते है –

प्रारंभिक खंड(Preliminary Section)

1. आवरण पृष्ठ (Cover Page)
2. प्रस्तावना
3. सारणियों की सूची
4. आरेखों की सूची

प्रतिवेदन का मुख्य भाग (Main Body of the Text)

प्रस्तावना

1. समस्या का कथन
2. सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण
3. समस्या की सार्थकता
4. अध्ययन का परिसीमन
5. परिकल्पनाओं का कथन
6. महत्वपूर्ण पदों की परिभाषा

अध्ययन की अभिकल्पना

1. प्रयुक्त प्रक्रियाएं
2. आँकड़ों के स्रोत
3. आंकड़ें संग्रहण के यन्त्र
4. प्रतिचयन एवं आंकड़ें संग्रहण की विधियां

आँकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या

सारांश व निष्कर्ष

1. समस्या व प्रक्रियाएं
2. प्रमुख परिणाम व निष्कर्ष
3. शोध के लिए सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ग्रन्थ सूची
2. परिशिष्ट

20.9 शब्दावली: (Glossary)

- **शोध प्रतिवेदन :** किसी समस्या का शोध करके उसके निष्कर्ष क्रियाविधि ,उद्देश्य आदि का वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करना ही शोध प्रतिवेदन कहलाता है |
- **सारांश** – शोध के उद्देश्यों , निष्कर्ष, कार्यविधि ,परिणाम आदि को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना |

20.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. मनोवैज्ञानिक शोध रिपोर्ट तैयार करने के प्रमुख चरणों की व्याख्या करें |
2. शोध प्रतिवेदन क्या होता है ? विस्तार से बताएं |
3. शोध प्रतिवेदन की लेखन शैली कैसी होनी चाहिए ?
4. शोध प्रतिवेदन लिखने में ध्यान देनी वाली कौन –कौन सी बातें होती हैं ? प्रकाश डाले |
5. शोध प्रतिवेदन लिखने के सामान्य नियमों की व्याख्या करें |

20.11 अतिरिक्त संदर्भ ग्रंथ सूची(Suggested Readings)

- कपिल ,डा० एच० के ० (2010): अनुसंधान विधिया – व्यवहारिक विग्रानो में , हर प्रसाद भार्गव , पुस्तक प्रकाशक ,4/230, कचहरी घाट , आगरा |
- त्रिपाठी , जगपाल (2007): मनोविज्ञान एव शिक्षा में शोध पद्धतिया , एच० पी० भार्गव बुक हाउस , 4/230, कचहरी घाट आगरा |
- त्रिपाठी , प्रो० लाल बचन एव अन्य (2008): मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतिया, एच ० पी० भार्गव बुक हाउस, 4/230, कचहरी घाट, आगरा |
- सिह, अरुण कुमार (2009): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधिया , मोतीलाल बनारसी दास , पटना एव वाराणसी |
- Goode, W.J.&Hatt, P.K.(1981): Methods in Scoial Research
- Festinger and Katz: Research method in Behavioural Sciences .
- Mc Guin, F.J.(1990): Experimental Psychology .
- सिंह, अरूण कुमार, (2001) शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन, पब्लिशर्स एड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
- सिंह, अरूण कुमार, (2001) संज्ञानात्मक मनोविज्ञान, वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स एड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
- सिंह, अरूण कुमार, (2001) उच्चतर मनोविज्ञान, पटना,भारती भवन, पब्लिशर्स एड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

View publication stats